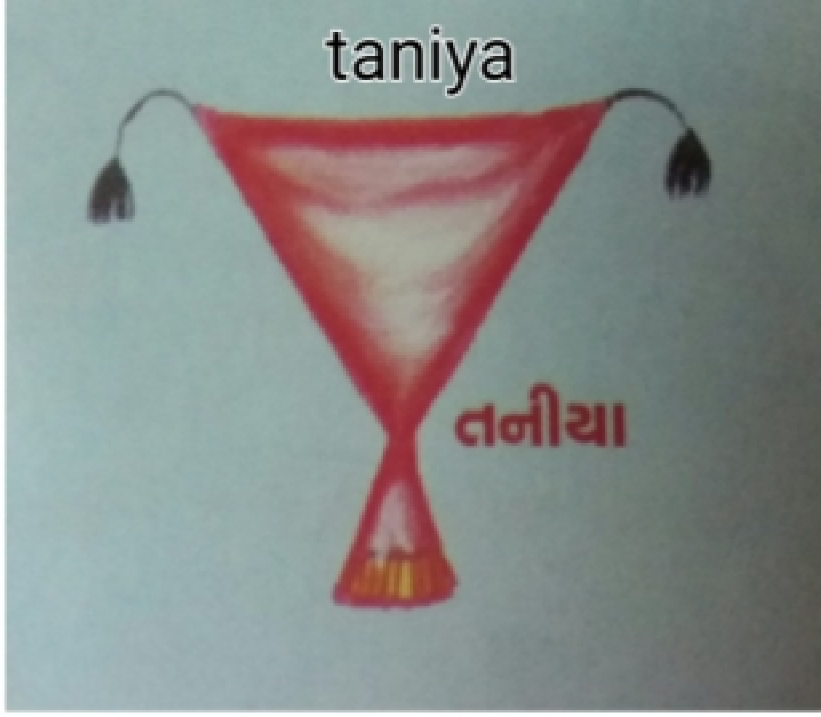

तनिया

तनिया थाडे स्वरुप धरे

तनिया नित्य धरे

थाडे स्वरुप तनिया धरके पोढे

देवप्रभोधीनी से दोल तक आत्मसुख के बागा धरके पोढे
बाकी के दिन तनिया धरके पोढे (आत्मसुख के बागा मे भी तनिया धरे)

लालन तनिया नही धरे युही पोढे ओर देवप्रभोधीनी से दोलउत्सव तक आत्मसुख के बागा धरके पोढे

मोती के वस्त्र

मोती के पिछोडा,धोती-उपरना, परदनी ,मल्लकाछ-पटका,आडबंध
आते हे जो उष्णकाल मे धरे जाते हे

मोती की पाघ भी धराय जाती हे

अखात्रीज से रथय़ात्रा तक धरे जाते हे

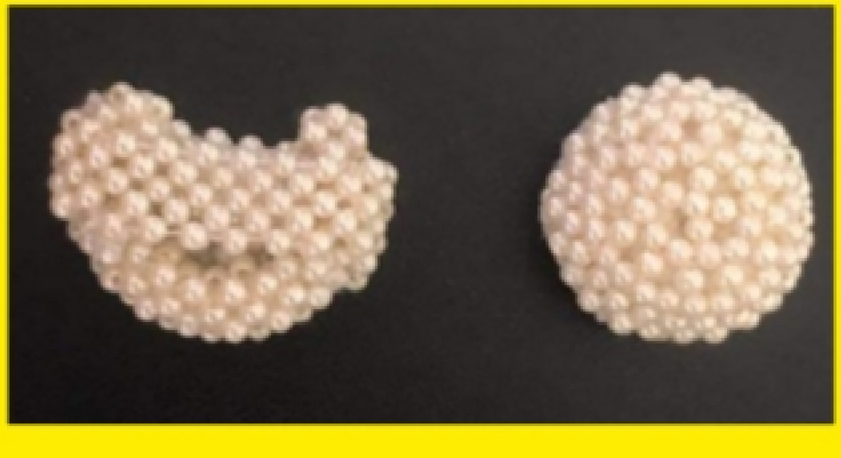

परदनी

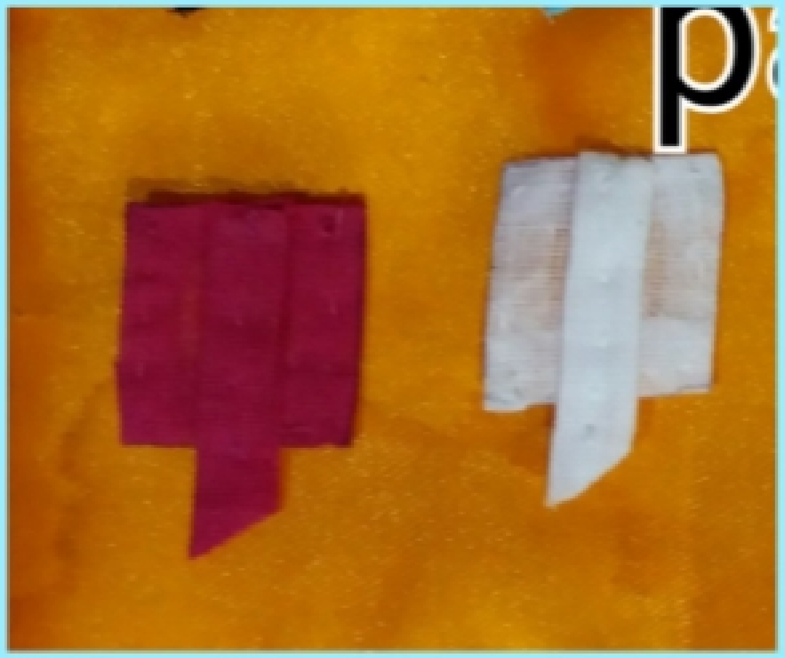

परदनी थाडे स्वरूप धरे

परदनी उष्णकाल मे आवे

परदनी के साथ श्रीमस्तक पे पाग,गोल पाग ,फेटा ,एक छोर वाली पाग आवे

ओर इनके साथ कतरा ,चन्द्रिका सादी ऐसे शींगार आवे

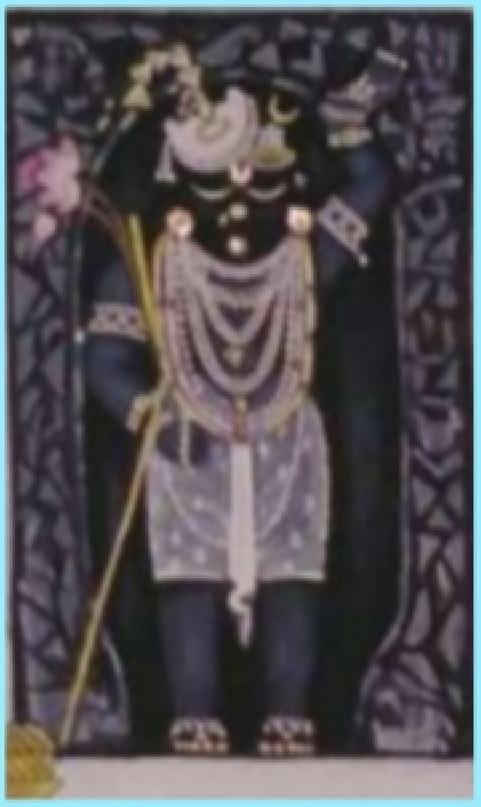

परदनी उष्णकाल के दिनो मे आवे इस लीये वो बहोत आछे रंग की आवे.
सफेद ,गुलाबी ,कपासी ,चेराई

परदनी के साथ कटी तक के ही आछे श्रींगार आते हे

उष्णकाल के हिसाब से अखात्रीज के बाद की पूनम पे ऋतु की प्रथम परदनी धराय जाती हे
ओर असाढ सुद चौदस पे आखरी परदनी के शींगार होते हे
इन तिथी के बीच मे भी कई कई बार धराई जाती हे
(श्रीनाथजी की रित)

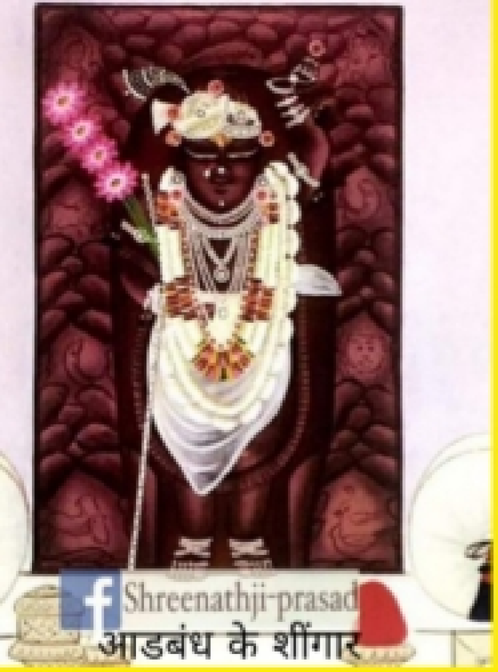

आडबंध

आडबंध मलमल के होय उष्णकाल मे आवे इसलिये तुई नही आवे
(रित के हिसाब से देखे)

जगा के धरे मंगला मे ,जो भी अगले दिन वस्त्र धरे हो वोही रंग के धरे ,
शींगार मे बडे हो जाये

रथय़ात्रा से धराये जाय
असाढ सुद पूनम तक
असाढ सुद पूनम के दिन मंगला मे धरे ऐकम से मंगला मे उपरना धरे

उष्णकाल मे कई कई बार आडबंध के शींगार भी होय ,
आडबंध के साथ पाग कतरा ,गोल पाग ,फेटा ,चन्द्रिका विविध धरी जाय

उष्णकाल के हिसाब से ह्ल्के रंग धरे बहोत गेहरे रंग नही होय

शींगार मे जब आडबंध होय तो ऐसा नही हे की अगले दिन जो रंग के वस्त्र हो वो धरे वो रीत सिर्फ मंगला मे ही होय

आडबंध के साथ कटी तक के ही ह्ल्के शींगार धरे

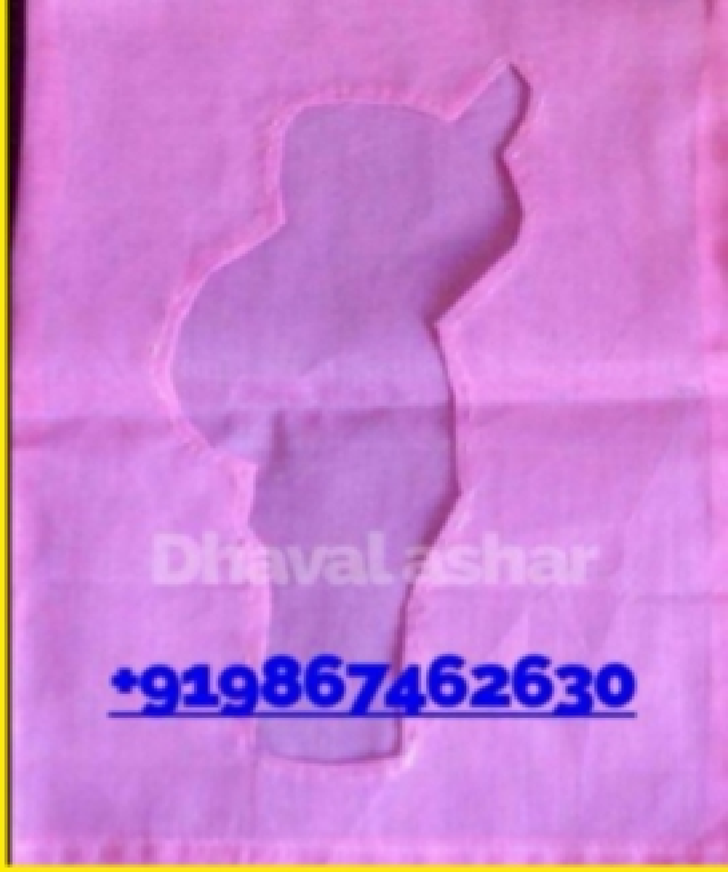

थाडे वस्त्र

जिस स्वरूप मे कंदराजी बिराजते हो
वो स्वरूप को कंदराजी पे धराने के वस्त्र थाडे वस्त्र कहे

वो मलमल ओर साटीन के होय

उष्णकाल मे नही धरे

वैशाख सुद सातम से नही धरे हिन्दोला प्रारंभ के दिन से धरने प्रारंभ होय उष्णकाल के हिसाब से

मलमल,चुनरी ,लेहरिया ,छिंट ,छापा के वस्त्र धरे तब थाडे वस्त्र मलमल के धरे
साटीन,ज़री के वस्त्र मे साटीन के धरे

थाडे वस्त्र प्लेन ही होते हे प्रीन्ट वाले नही होते ऐक य़ा दो बार ही प्रीन्ट वाले आते हे .

थाडे वस्त्र मे तुई लेश नही आती

थाडे वस्त्र हंमेशा जो रंग के वस्त्र बागा धरे हो उसके कोनट्रास मे धरे (खुलते रंग के) केवल घटा मे ही वस्त्र ओर थाडेवस्त्र ऐक रंग के धरे

मुगट जब धरे तब थाडे वस्त्र सफेद ही धरे

चित्रजी मे फ्रेम के वस्त्र थाडे वस्त्र के भाव से धर सके

पीछोडा

रामनवमी से बागा बडा हो जाये (पूरा श्रीअंग का) ओर
कटी से चरन तक के वस्त्र धराने प्रारंभ होय,आसो की नवरात्री तक

आसो की नवरात्री के प्रथम दिन से फीर से बागा धराना प्रारंभ होय

पिछोडा मलमल ,चुनरी ,लेहरिया के होय

उष्णकाल मे ह्ल्के रंग के मलमल के आवे बिना तुई के
क्सुम्बा छठ से गेहरे रंग आवे

पिछोडा के साथ शेहरा, विविध कतरा चन्द्रिका ,कुलहेजोड आवे

फैंटा ,ग्वालपाग,दुमाला,सादीपाग ,गोलपाग,एक छोरवाली पाग धरे

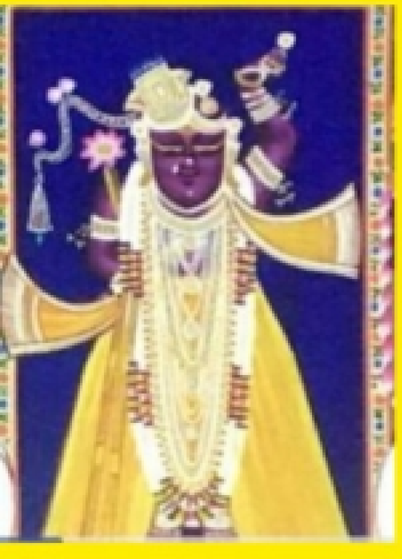

कई कई जगह टीपारा भी धरे हे

पिछोडा के साथ शेहरा धरे तब उसके साथ पटका आते हे

सुथन पटका

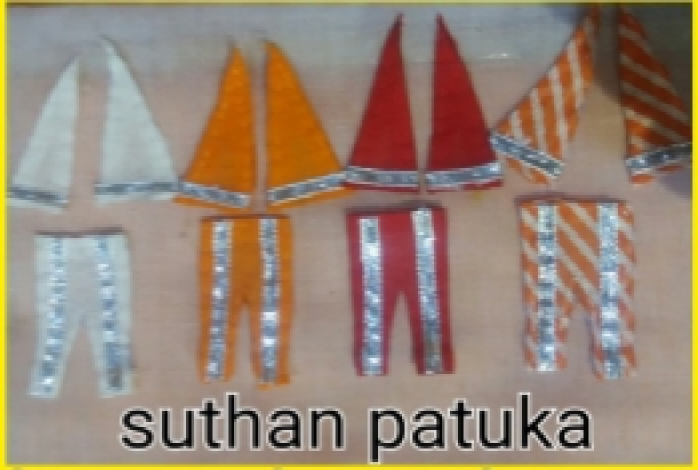

सुथन (कटी से चरन तक)ओर पटका होय

रामनवमी से बागा बडा होय (पूरा श्रीअंग का)ओर कटी से चरन तक के वस्त्र धराने प्रारंभ होय

आसो की नवरात्री से फिर से बागा धरे

सुथन-पटका उष्णकाल ,वर्षाकाल मे धरे

सुथन-पटका मलमल ,चुनरी ,लेहरिया के होय

सुथन-पटका के साथ श्रीमस्तक पे विशेष फेटा ओर उसके ऊपर मोरसिखा कतरा धरायेजाये (श्रीनाथजी की रित)

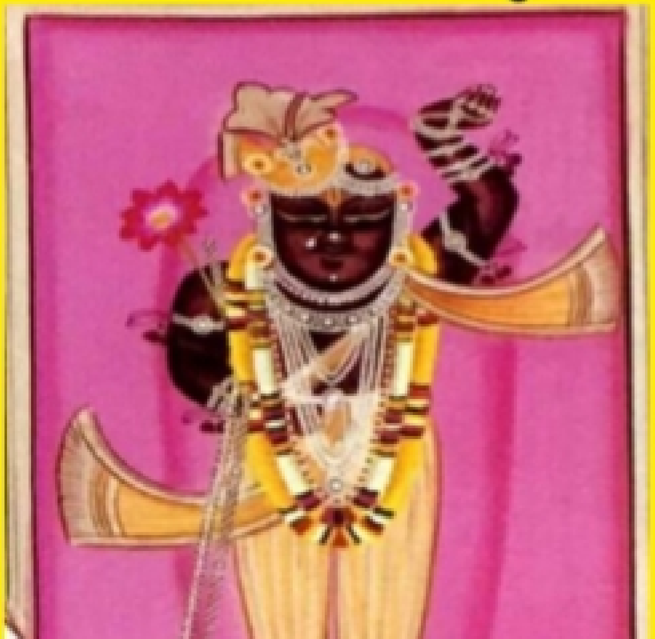

अपनी रित के अनुसार करे

सुथन-पटका के साथ कटी तक के श्रींगार आवे

पटका चित्र मे धरे हे वेसे धरे

रित के अनुसार धरे (श्रीनाथजी की रित अनुसार पांच बार सुथन पटका आते हे)

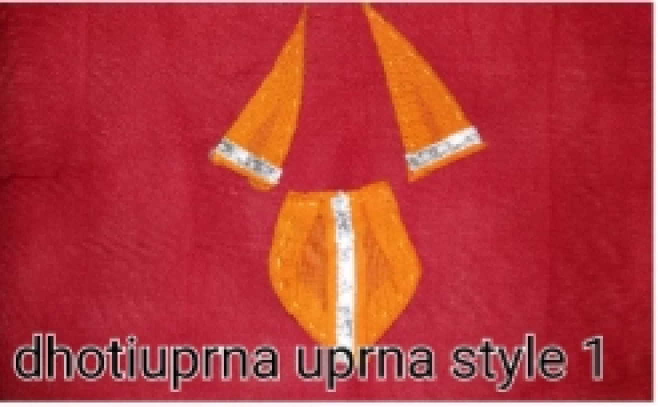

dhotiuprna uprna style 1

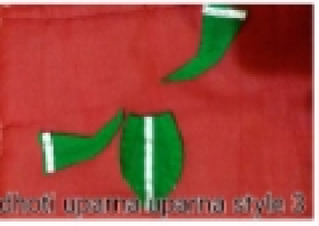

dhoti uparna uparna style 3

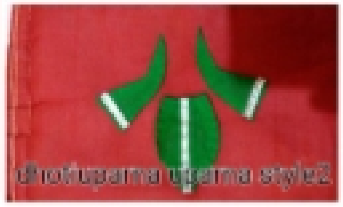

dhotiuparna uparna style2

धोती-उपरना

धोती ओर उसके संग उपरना आवे

थाडे स्वरुप धरे

धोती उपरना मलमल के आवे
उष्णकाल मे गेहरे रंग नही आवे आछे रंग धरे जाय
वर्षाकाल मे सभी रंग आवे

धोती-उपरना उष्णकाल , वर्षाकाल मे आवे

रामनवमी के दुसरे दिन से बागा बडा हो जाये (पूरा श्रीअंग का वस्त्र)
ओर कटी से चरन तक के वस्त्र धराने प्रारंभ होय ,
रामनवमी के बाद धराने प्रारंभ होय

धोती-उपरना के साथ श्रीमस्तक पे सादीपाग ,गोलपाग ,दुमाला ,फेटा ,
ग्वालपाग ,एकछोरवालीपाग ,कुलहेजोड धरी जाय ,ओर कतरा ,विविध चन्द्रिका धरी जाय

धोती-उपरना के साथ उष्णकाल मे कीरीट मुगट भी धराये जाते हे ओर
धोती उपरना के साथ शेहरा भी धराये जाते हे

धोती-उपरना मे उपरना तिन प्रकार से धराये जाते हे

उष्णकाल मे तुई लेस नही आवे

मल्लकाछ -पटका

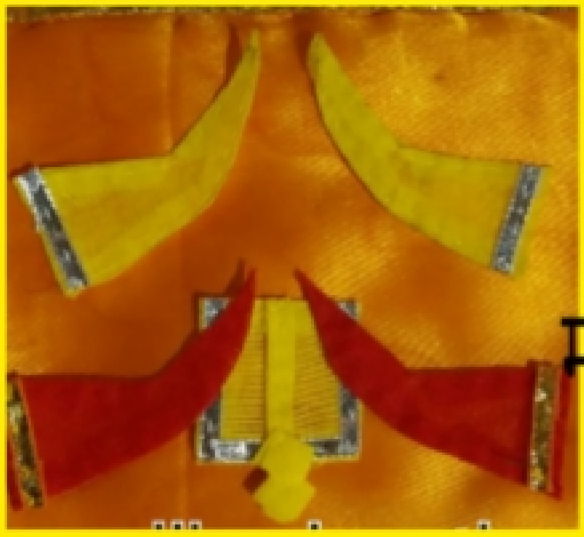

मल्लकाछ के संग टीपारा धरे जाय दोनो को मेल हे

मल्लकाछ उष्णकाल वर्षाकाल मे धरे

रामनवमी से बागा बडा होय ओर कटी से चरन तक के वस्त्र धरने प्रारंभ होय तब से धरे जाय
आसो की नवरात्री से बागा प्रारंभ होय तब तक धरे

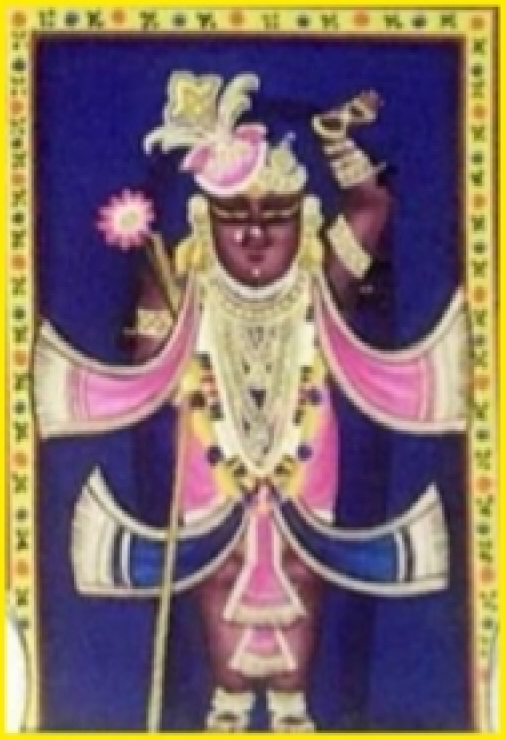

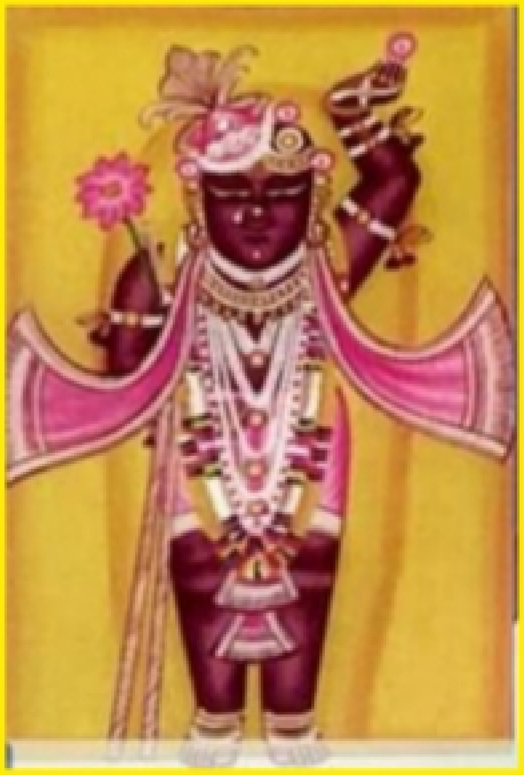

मल्लकाछ मलमल ओर चुनरी के होय

मल्लकाछ के साथ कटी तक के ही शींगार धरे

मल्लकाछ के साथ पटका भी धरे कई बार दोहरा पटका भी धरे जो कटी पे धरे

दोहरा पटका धरे तब कटी को पटका दुसरे रंग को होय
ओर जब ऐक ही जोड पटका धरे तब वो ओर मल्लकाछ ऐक ही रंग के होय

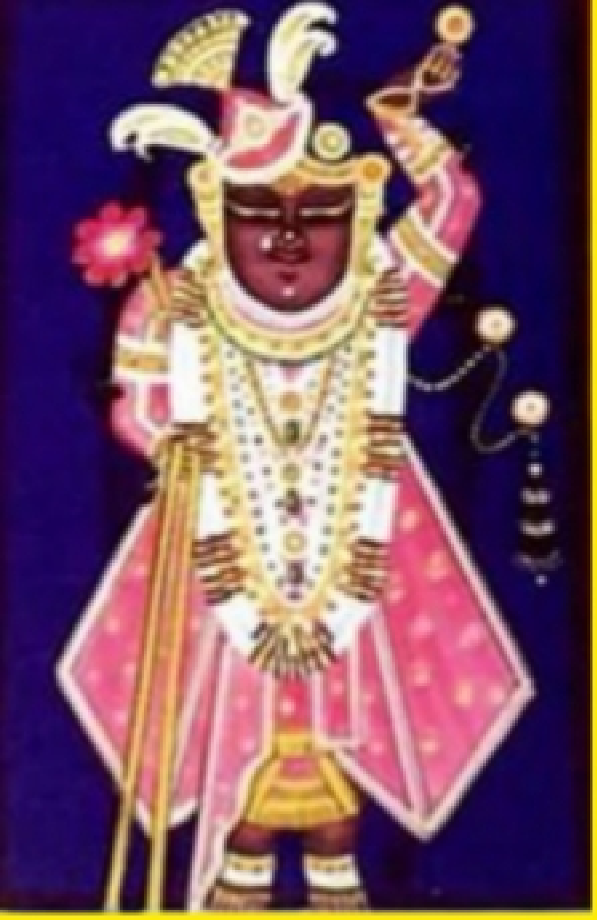

खुल्लेबंध के चाकदार ओर मल्लकाछ

खुल्लेबंध के चाकदार ओर मल्लकाछ
ये बागा आसो ओर चैत्र की नवरात्री मे धरे
विशेष टीपारा धरे तब धरे

इसमे चोली ओर खुल्लेबंध ऐक रंग के धरे ओर
मल्लकाछ दुसरे रंग का खुलते रंग का धरे

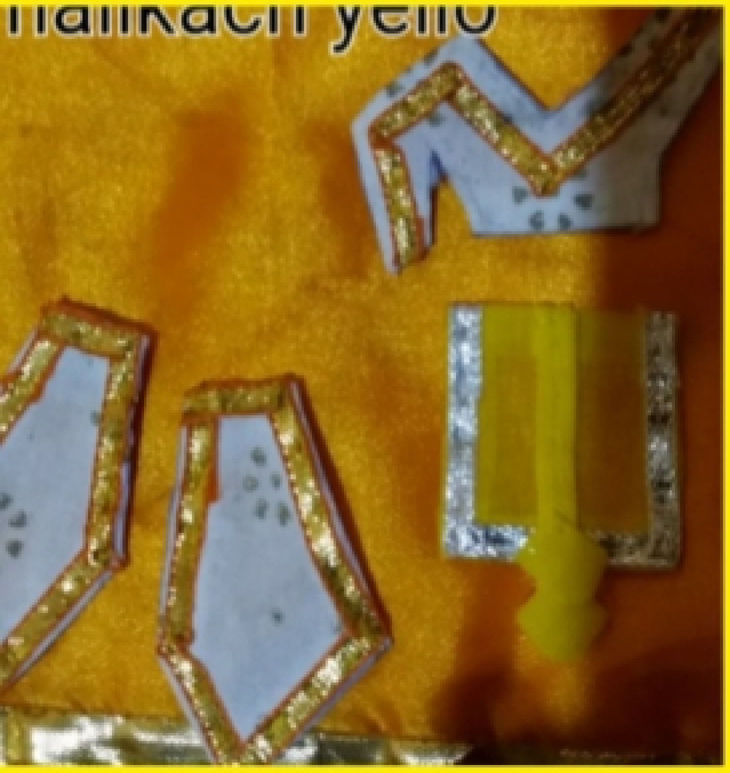

सुथन के स्थान पे मल्लकाछ धरे

चित्र मे देखे

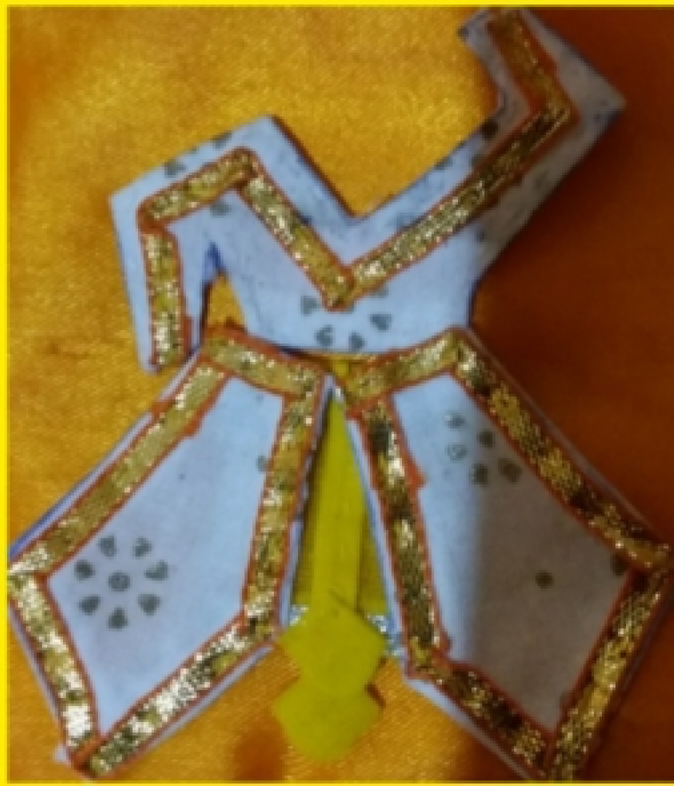

खुल्लेबंध के चाकदार ओर मल्लकाछ

खुल्लेबंध के चाकदार ओर मल्लकाछ
ये बागा आसो ओर चैत्र की नवरात्री मे धरे
विशेष टीपारा धरे तब धरे

इसमे चोली ओर खुल्लेबंध ऐक रंग के धरे ओर
मल्लकाछ दुसरे रंग का खुलते रंग का धरे

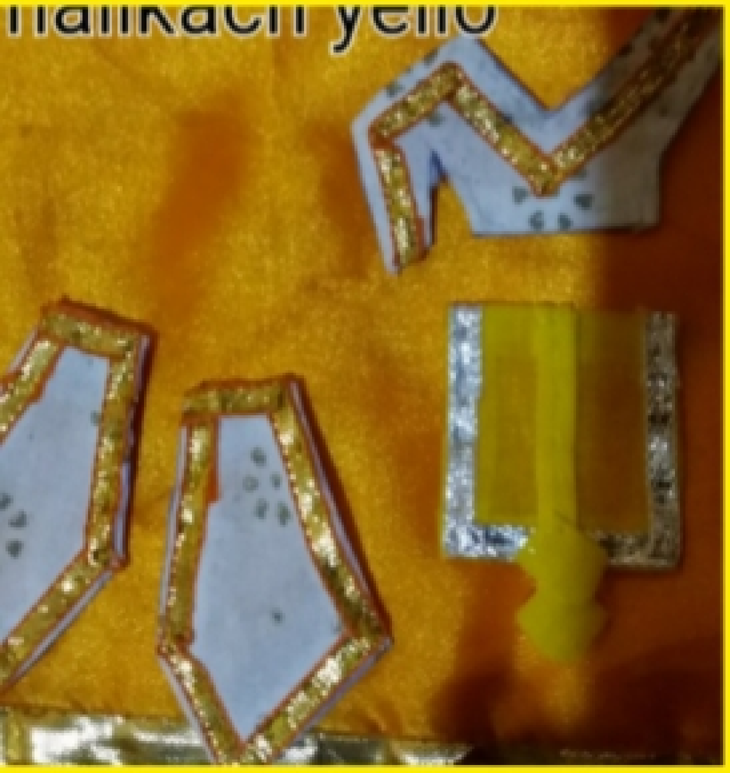

सुथन के स्थान पे मल्लकाछ धरे

चित्र मे देखे

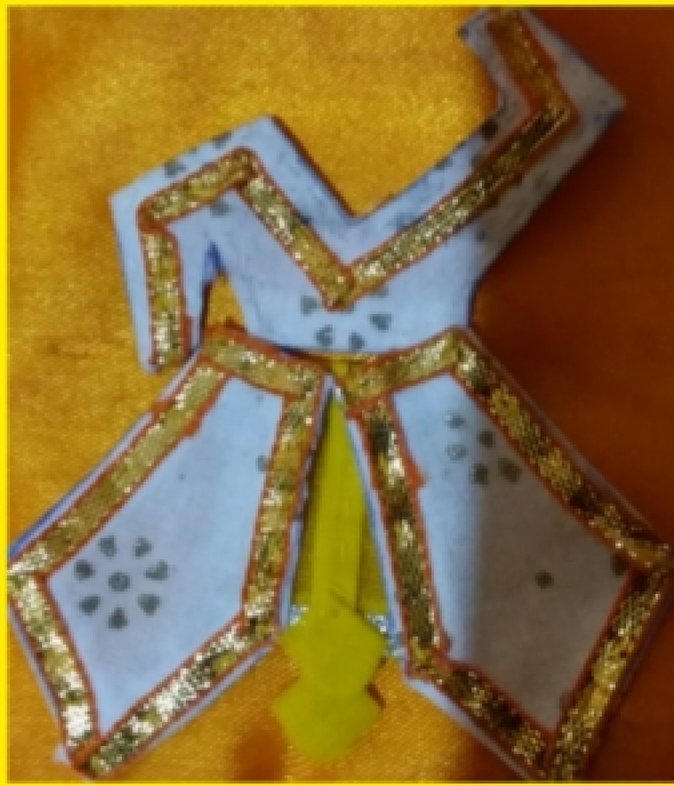

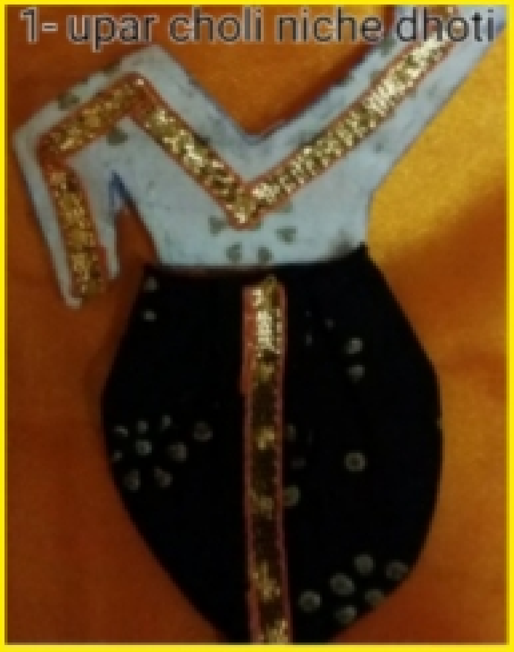
1- upar choli niche dhoti

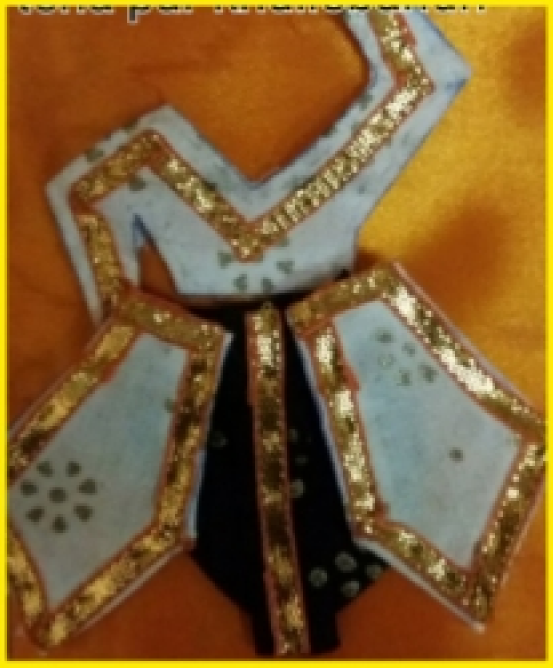

खुल्लेबंध के चाकदार ओर धोती

ये बागा चैत्र ओर आसो की नवरात्री मे आवे

जीसमे चोली(कोठावस्त्र) ,सुथन की जगह धोती ओर उपर खुल्लेबंध को चाकदार आवे

विशेष नवरात्री मे शेहरा के शींगार हो तब ये प्रकार का बागा आता हे ,

कई बार पाघ कतरा भी धरे हे

जब भी ईस प्रकार के बागा धरे तब चोली ओर खुल्लेबंध ऐक रंग के

ओर धोती ओर पाघ ऐक रंग के ऐसे खुलते रंग के धरे

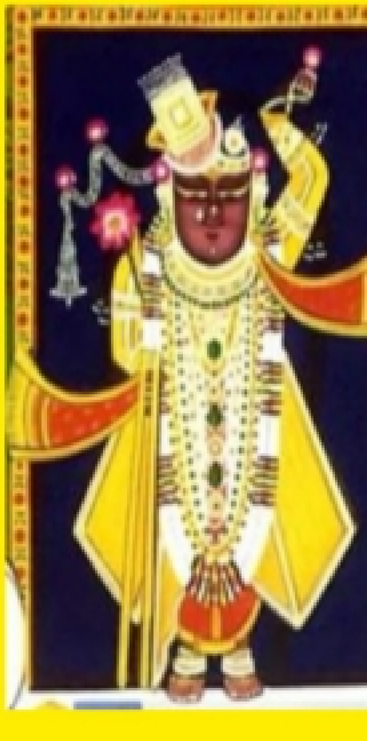

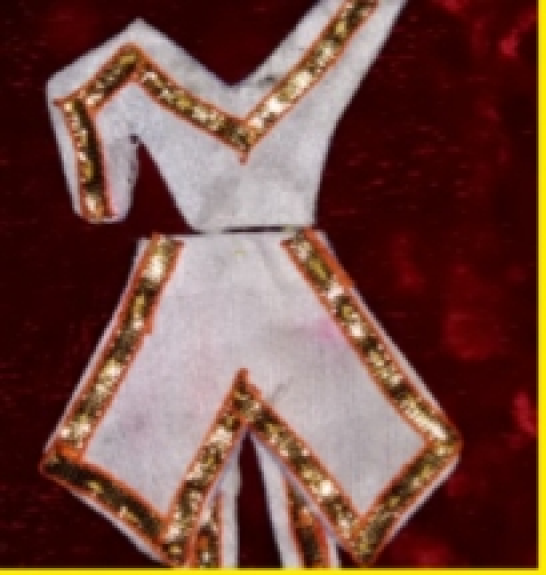

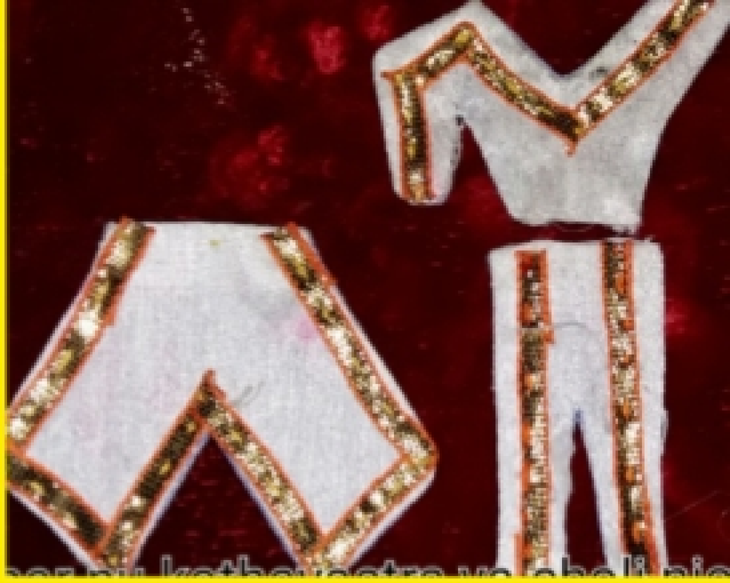

चाकदार

आसो की नवरात्री के प्रथम दिन से बागा धराना प्रारंभ होय
बागा (पूरा श्रीअंग का वस्त्र चाकदार ओर घेरदार)
जीसमे चोली (कोठावस्त्र उपर धरे) ,सुथन (कटी से चरन तक)
ओर इसके उपर चाकदार य़ा घेरदार धरे

बागा रामनवमी तक धरे फीर बंध हो के कटी से चरण तक के वस्त्र धरे

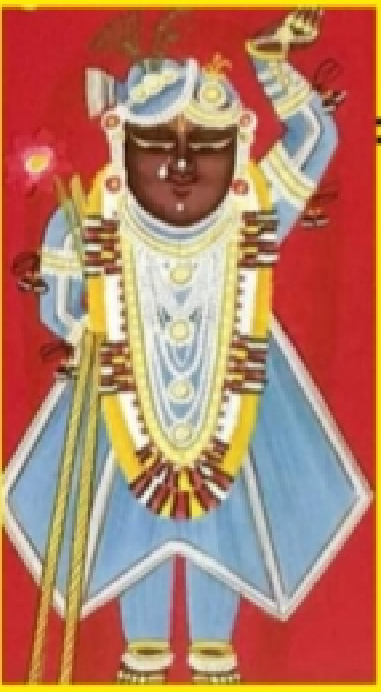

चाकदार छापा ,ज़री ,साटीन ,मलमल ,छिंट के होय

चाकदार के साथ टीपारा ,शेहरा ,कुलहेजोड धरे

शितकाल मे कीरीटमुगट चाकदार के साथ धरे

चाकदार के साथ सभी प्रकार की पाघ धरे ,कतरा ,चन्द्रिका धरे

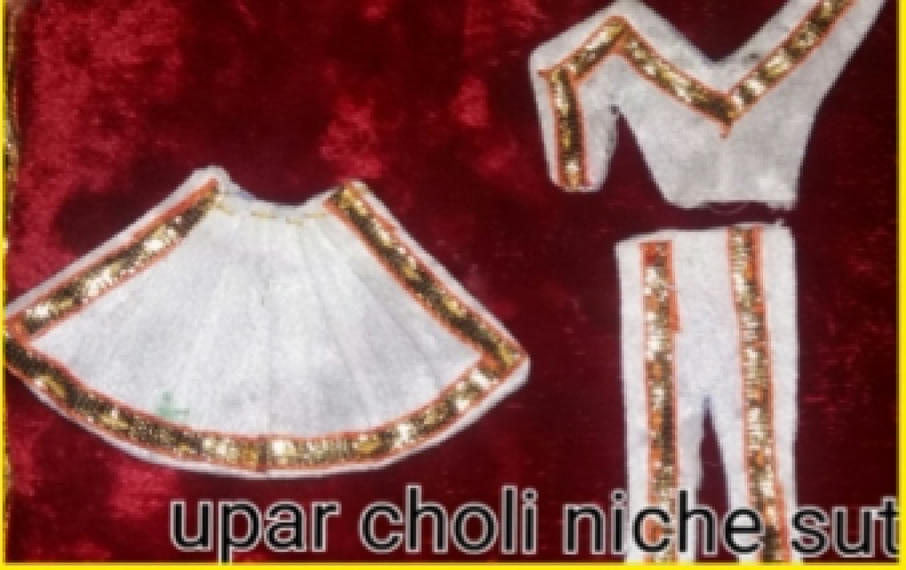

घेरदार

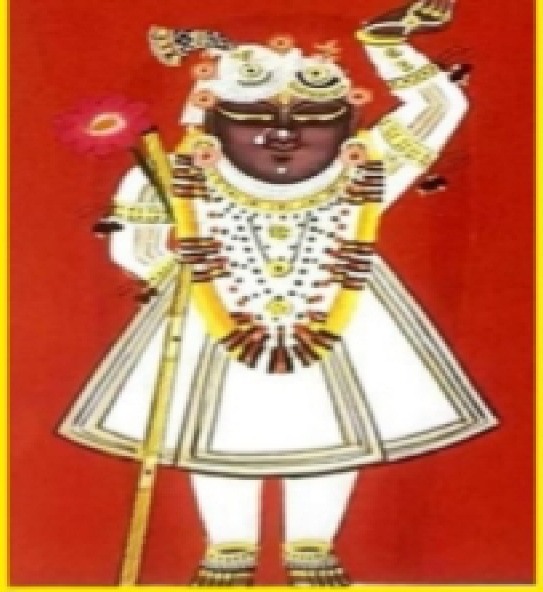

आसो की नवरात्री के प्रथम दिन से बागा धराना प्रारंभ होय
बागा (पूरा श्रीअंग का वस्त्र चाकदार ओर घेरदार)
जीसमे चोली (कोठावस्त्र उपर धरे) ,सुथन (कटी से चरन तक)
ओर इसके उपर चाकदार य़ा घेरदार धरे

ऐक दिन चाकदार ऐक दिन घेरदार ऐसे धरे

बागा रामनवमी तक धरे फीर बंध हो के कटी से चरण तक के वस्त्र धरे

घेरदार के साथ सभी प्रकार की पाघ चन्द्रिका ,कतरा धरे

घेरदार मलमल,चुनरी ,लेहरिया ,साटीन,जरी ,छिंट के होय

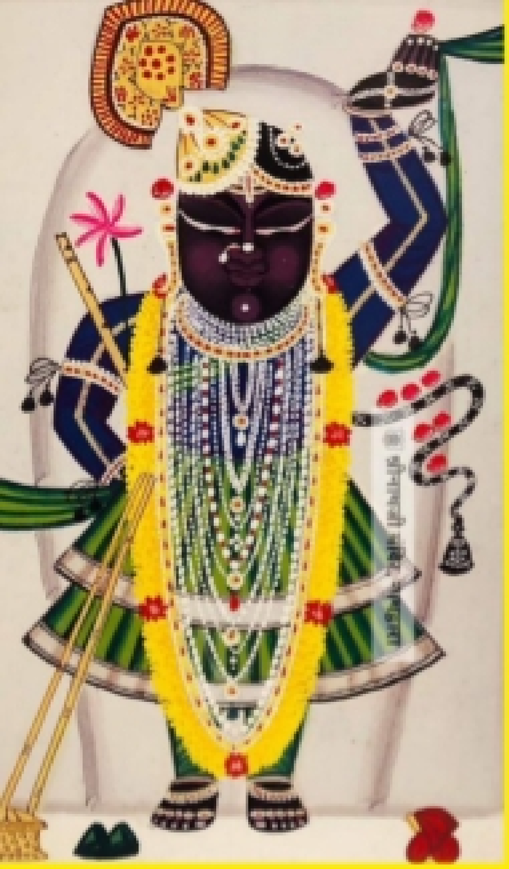

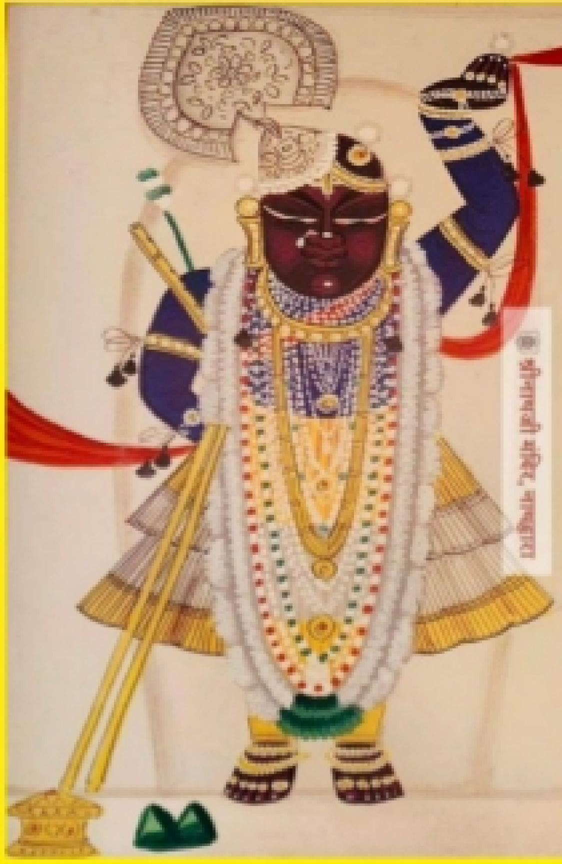

काछनी

काछनी ओर मुगट का मेल हे मुगट के साथ काछनी धरे

काछनी दो घेरा की भी होय ओर तिन घेरा की भी होय

दो घेरा मे दोनो विशेष ऐक ही रंग के होय
तिन घेरा की होय उसमे पेहली ओर तिसरी ऐक रंग की बीच वाली अलग रंग खुलते रंग की होय

काछनी मलमल ,चुनरी ,कई बार लेहरिया की ,साटीन,ज़री की होय

रामनवमी के बाद बागा बडा होय
(पूरा श्रीअंग का) आसो की नवरात्री प्रारंभ के अगले दिन तक इन दिनो मे मुगट काछनी के शींगार मे
काछनी ओर सुथन ओर पटका आवे

आसो की नवरात्री से रामनवमी तक
जब जब भी मुगट काछनी धरे
तब काछनी ,सुथन ,चोली (कोठावस्त्र),पटका धरे
क्योकी इन दिनो पूरे श्रीअंग का बागा आता हे इस लीये चोली धरे

चिरा-ओढनी

चीरा ओर ओढनी लालन स्वरूप धरे

रामनवमी से केवल ओढनी आवे,
आसो की नवरात्री के प्रथम दिन से चीरा ओर ओढनी दोनो आवे

रामनवमी ओर आसो की नवरात्री के बीच मे जब बडे उत्सव आवे तब वो दिन ही चीरा ओर ओढनी दोनो
धरे दुसरे दिन से फीर ओढनी धरे

थाडे स्वरूप को भी रामनवमी से बागा (पूरे श्रीअंग का वस्त्र)बडा हो के
कटी से चरन तक के वस्त्र आवे आसो की नवरात्री के अगले दिन तक
पर इन बीच बडे उत्सव आवे जेसे श्रीमहाप्रभूजी उत्सव ,जन्माष्टमी ,राधाअष्टमी पे बागा धरे मलमल के
दुसरे दिन से फीर बडा हो जाये .
आसो की नवरात्री से बागा प्रारंभ हो जाये रामनवमी तक

Sahil.